

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम  
की सील

Blank box for exam name and seal.



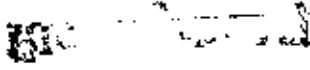
1. विषय कोड **05L**

परीक्षा का विषय **Hindi (General)**

2. परीक्षा का माध्यम **English**

परीक्षा की दिनांक **20-03-0**

केन्द्र क्रमांक की सील



पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक

उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में **01** अंकों में **One**

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक **03** में है।

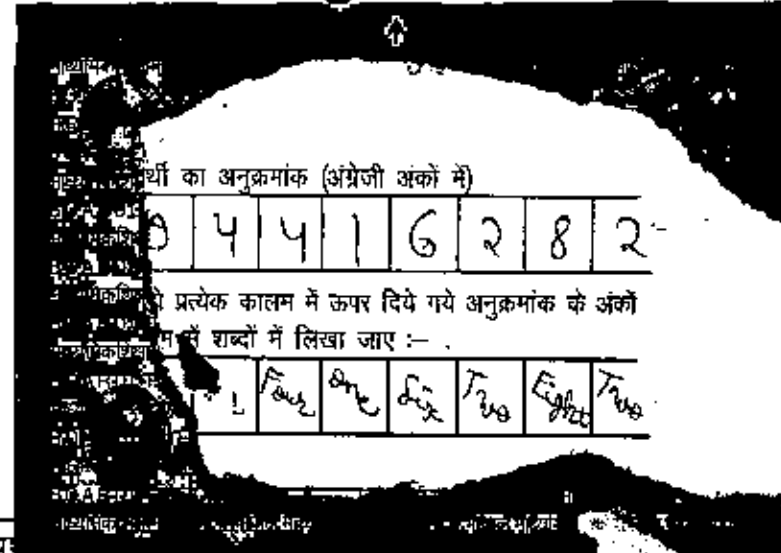
ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर

(सेट **A, B, C, या D**) अनिवार्यतः भरें

कोड सेट  
**U-2002**

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें



परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

**04416282**

प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों में शब्दों में लिखा जाए :-

**Four One Six Two Eight Two**

**B** हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) *Abhishek*

**S** नाम **श्रीमती सरिता माल केसव कल्याणक**

**E** पता/संस्था **शा. 3. मा. वि. म. भोपाल**

**M** परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

**P** हस्ताक्षर (केन्द्राध्यक्ष) *[Signature]*

1	3	11	13	21	23
2	4	12	14	22	
3	5	13	15	23	
4	6	14	16	24	
5	7	15	17	25	
6	8	16	18	26	
7	9	17	19	27	
8	10	18	20	28	
9	11	19	21	29	
10	12	20	22	30	
कुल प्राप्तांक		शब्दों में			

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन चस्था स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) *[Signature]*  
परीक्षक क्रमांक **9240608**

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)  
दिनांक.....

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)  
दिनांक.....

### परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-  

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरे उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

### परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

### मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

=



कुल अंक



1.

(i) सूरदास कृष्ण के अनन्य भक्त हैं।

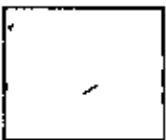
(ii) नर से नारायण निबंध के लेखक गुलाबराय हैं।

(iii) बड़े लोगों की वस बात ही बड़ी होती है।

(iv) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदी युग के निबंधकार थे।

(v) अर्थ के आधार पर वाक्यों के आठ भेद होते हैं।

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

4

योग पूर्व पृष्ठ

+

अंक

कुल अंक



2.

(i)

'नर से नाशयण' निबंध में लेखक ने बतरी साहब का विमंत्रण कब स्वीकार किया?   
 (घ) जब उनका घर जलमग्न हो गया।

उत्तर

(ii)

'देवदार कोउ और है' के द्वारा रहीमदास ने संकेत किया है -

उत्तर

(क) ईश्वर की ओर।

B

(iii)

'भुजंगिनी - सी' में अलंकार है:

S उत्तर

(क) उपमा

E

(iv)

'हिमालय और हम' कविता के कवि हैं:

M उत्तर

(ख) गोपालसिंह नेपाली

P

(v)

प्रधानाध्यापक में समास है:

उत्तर

(ख) कर्मधारय



पृष्ठ के अंकों का योग

5

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 5 क अक                      कुल अक



3.

(i) ब्रज के लोग बादलों की गर्जना सुनकर अत्यंत भयभीत हो गये।

उत्तर

सत्य।

(ii) तुम्हारे कमल बदन कुम्हिले में सपका अलंकार है।

उत्तर

सत्य।

B

(iii) बल बहादुरी विबंध के लेखक यतीन्द्र मिश्र हैं।

S

उत्तर

असत्य।

E

M

(iv) विमाहर का 'रत्नाज' एक विबंध है।

उत्तर

असत्य।

P

(v) गाँधीजी अक्षर जान को ही शिक्षा समझते थे।

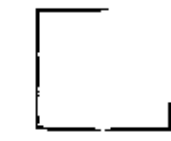
उत्तर

असत्य।



शुद्ध के अंकों का योग

6



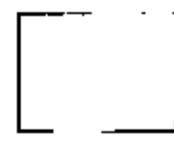
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 6 के अंक

=



कुल अंक



4.

(i) यशोधरा ने बसन्त करा है → (ग) सिद्धार्थ को ।

(ii) कल्याणकुमारी नाम पड़ा है → (घ) पार्वती के नाम पर ।

iii) अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है → (स) महात्मा गाँधी ।

B (iv) अम्बुज → (ग) कमल ।

S (v) मिश्रालें → (क) पृथ्वी और अग्नि ।

E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

7

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 7 के अंक

=

कुल अंक



5.  
(i)  
उत्तर

त्राटि - त्राटि वर्षों मची हुई थी।  
सितंबर के महीने तक वर्षा न होने के  
कारण त्राटि त्राटि मची हुई थी।

(ii) सिरचन मानू को मिलने रेलवे स्टेशन  
वर्षों गया ?

उत्तर सिरचन मानू शीतलपाटी और चीक  
मेंट करने के लिए रेलवे स्टेशन  
गया।

(iii) बिना पानी के कौन महत्वहीन हो जाते  
हैं ?

उत्तर बिना पानी के मोती, मनुष्य और  
आटा महत्वहीन हो जाते हैं।

(iv) यशोधरा कौन थी ?

उत्तर यशोधरा सिद्धार्थ की पत्नी थी।

(v) टंसिनी ने राज काल किसे सौंपने का  
सुझाव दिया ?

→ टंसिनी ने राज काल प्रजा को सौंपने  
का सुझाव दिया।

पृष्ठ के अंकों का योग

8

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 8 के अ.

-

कुल अंक

6.  
अंतर →

जब श्री कृष्ण मथुरा चले जाते हैं तब  
 यशोदा उड़क के माध्यम से देवकी  
 को संदेश भेजती हैं कि मैं तो कृष्ण  
 की धाय हूँ फिर भी तुमसे विनती  
 करती हूँ कि कृष्ण पर ममता बनाए  
 रखना । कृष्ण को प्रातःकाल मासत रोटी  
 अच्छी लगती है अतः प्रातःकाल उसे  
 मासत रोटी ही देना । गर्म पानी और  
 उबटन देसकर वह भाग जाता है अतः  
 उसे नहाने के लिए मनाना । श्री कृष्ण  
 संकोची स्वभाव के हैं अतः तुम्हें ही  
 उनकी आदतों और रुचियों का ध्यान  
 रखना होगा ।

B  
S  
E  
M  
P
 पृष्ठ के अंकों का योग

P-7.05

9

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

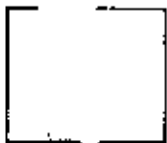
कुल अंक

7.  
उत्तर

कवि भूषण ने छत्रसाल की बरछी की विशेषताएँ बताते हुए कहा है कि छत्रसाल की बरछी सदैव उनके हाथों में विशाल मान-रहती है।

यह बरछी अत्यंत मंथकर एवं क्रूर है। यह शत्रुओं के बड़े-बड़े समुह का पीछा करती नागिन के समान उनके प्राणों को टरण करती है। यह शत्रुओं के कवच को चीरकर उनके शरीर में ऐसे प्रवेश करती है जैसे मछली नीर की तरह गहरे समुद्र में उतर जाती है। उनकी बरछी से कटकर शत्रु ऐसे तड़पते हैं जैसे पंख कटे पक्षी है।

इस प्रकार छत्रसाल की बरछी शत्रुओं का संहार करने में समर्थ है।



पृष्ठ नं. बॉक्स का योग

P.T.O.

10



+



=



यांग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



उत्तर

दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ मानी गई हैं -

शब्द और कृति ।

बैसे तो दोनों ही शक्तियाँ

श्रेष्ठ हैं पर हममें कोई शक नहीं

है कि शब्दों ने सारी पृथ्वी को

टिला दिया है । पर अमिष शक्ति कृति

की है । कस्तूरबा की निष्ठा कृति में है ।

कस्तूरबा ने अपनी कृतिनिष्ठा के

द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया की व्यक्ति

के संस्कार उसका सद्चरित्र ही उसे

श्रेष्ठ व्यक्तियों की श्रेणी में लाते हैं ।

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ 1 का योग



उत्तर 9.

गाँधीजी शिक्षा प्राप्ति को जीवन का एक आवश्यक कार्य मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा द्वारा ही मनुष्य का विकास होता है। वे शिक्षा में "गणित" और "संस्कृत" विषयों पर अधिक दृष्टान देने को कहते हैं क्योंकि बड़ी भाषा में इन्हें सीखना कठिन होता है।

गाँधीजी केवल अक्षर ज्ञान को ही शिक्षा नहीं मानते हैं। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा तो चरित्र निर्माण और कर्तव्य का बोध है। गाँधीजी व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक बल देने थे।

B  
S  
E  
M  
P



10.  
उत्तर

"श्री देवेन्द्र दीपक" द्वारा लिखित निबंध "पुस्तक" में उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की अनेक विशेषताएँ बताई हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय भारत का एक महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय था। शिक्षा के क्षेत्र में इसका अच्छा स्थान था।

यहाँ केवल भारत से ही नहीं अपितु सभ्य देशों से भी विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे।

यहाँ पर दस हजार विद्यार्थी एवं पन्द्रह सौ आचार्यों का समुह था।

यहाँ पर आचार्य शीलभद्र, नागार्जुन, आचार्य धर्मकीर्ति, आचार्य लान्ग्री जैसे विशिष्ट आचार्यों द्वारा अध्ययन कराया जाता था।

नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय अत्यंत था। इस एक पुस्तकालय में तीन पुस्तकालय थे जिन्हें 'रत्नसागर', 'रत्नोदधि' और 'रत्नरंजक' के नाम से जाना जाता था।



13

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 13 अंक

=

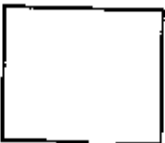
कुल अंक



11.

"उल्टे बाँस बरेली" अर्थात् जैसा लोग चाहते हैं उसके विपरीत कार्य का होना। विदेशी शक्ति हमारे कटावत को चरितार्थ करते हुए हमारी संस्कृति और जीवन पद्धतियों को हमें ही पट कटकर लौटा रहे हैं कि ये उनकी स्वयं की सोच है, महत्वपूर्ण उपलब्धि है जो उन्होंने बरसों की मेहनत से प्राप्त की है। और हम भी नादानों की तरह उन पद्धतियों को आयातित क संभलकर सटर्प अपनाते जाते हैं। इसके प्रमुख उदाहरण हैं वास्तुशिल्प योग-साधना और सत्त्वज्ञान को ये पैंगारुई, योगा और रेकी के नाम से परोसकर स्वयं बाह्यवादी लुटना चाहते हैं।

C  
B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

14

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 14 के अंक                      कुल अंक



उत्तर

द्विवेदी युग" प. महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से जाना जाता है। यह निबंध साहित्य के विकास का दूसरा चरण है। इसकी अवधि सन् 1900 ई. से 1920 ई. है।

द्विवेदी युग के निबंधकार इस प्रकार हैं:

निबंधकार	निबंध
----------	-------

(i) महावीर प्रसाद द्विवेदी → ① साहित्य - सीकर  
② विचार - विमर्श

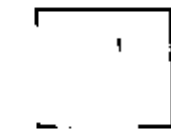
(ii) अध्यापक कृष्णकृष्ण → ① सच्ची वीरता  
② मजबूती और प्रेम

B  
S  
E  
M  
P

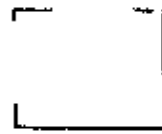


पृष्ठ ... अंकों का योग

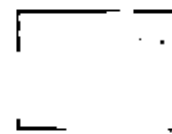
15



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



13.

(आ)

(क)

फूट - फूटकर रोना → अत्यधिक दुखी होना ।  
प्रयोग → परीक्षा में उत्तीर्ण न होने पर राम  
~~फूट- फूटकर रोने लगा ।~~

(ख)

त्राहि - त्राहि मचना → टाटाकार मचना ।  
प्रयोग → सितंबर के महिने तक वर्षा न  
 होने पर त्राहि त्राहि मच गई ।

(ब)

(क)

पुस्तक चुश्या जाता है ।  
शुद्ध → पुस्तक चुशरी जाती है ।

(ग)

मीरा सुन्दरी लड़की है ।  
शुद्ध → मीरा सुन्दर लड़की है ।



पृष्ठ के अंकों का योग

B  
S  
E  
M  
P



14.  
(अ)

(क) उपेक्षा → हम निरन्तर कार्य की उपेक्षा करते हैं।

अपेक्षा → हम तुमसे अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं।

(ख)

जाति → सीता की जाति क्षत्रिय है।

जाती → सीता विवाह के बाद घर जाती हैं।

B  
(ब)

S (क) आपको चुप रहना चाहिए। (आज्ञावाचक)

E आप चुप रहिए।

M (ग)

तुम परिश्रम करो और परीक्षा में सफल हो जाओ। (सरल वाक्य)

P (खर) तुम परिश्रम करने से परीक्षा में सफल हो सकते हो।





15.

(ii)

प्रकृति पर विजय पाकर ही मनुष्य दम लेता है।

अंतर→

यह एक प्रसिद्ध उक्ति है जिसका अर्थ है कि मनुष्य प्रकृति को जीतकर ही रहता है। प्रकृति और मनुष्य की लड़ाई में जीत हमेशा मनुष्य की ही होती है क्योंकि मनुष्य प्रकृति को नष्ट कर देता है।

उदाहरण स्वरूप यदि हम देखें तो

जब महाभारत ज्ञानी नाव लेकर समुद्र में जाता है तब समुद्र की लहरों से हमें लगता है कि उसकी नाव जब डूबी की तब डूबी। परंतु कुछ ही क्षण में वह लहरों के ऊपर होता है।

B  
S  
E  
M  
P



16.

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक मकरंद के पाठ "मेरे सपने का भारत" से लिखा गया है। इसके लेखक "डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम" हैं।

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने स्वतंत्रता के बाद भारत को एक विकसित देश बनाने के लिए अवसर बताए हैं।

व्याख्या → डॉ. कलाम कहते हैं कि वैश्वीकरण के इस युग में जहाँ विश्व बौद्धिक समाज में परिवर्तित हो रहा है वहाँ ज्ञानशक्ति और सम्पदा भी एक हो रही हैं। यह भारत के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। हमें अपनी प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना चाहिए ताकि हम भी एक बौद्धिक शक्ति बनें। बौद्धिक रूपान्तरण ही सही अर्थों में भारत को विकासशील से एक विकसित देश बना सकता है।

19

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 19 के अंक

कुल अंक



17.

संदर्भ :-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक मकरंद की कविता "हिमालय और हम" से लिखा गया है इसके रचयिता कवि "गोपाल सिंह नेपाली" हैं।

प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्य में कवि ने हिमालय और भारतवासियों के संबंध बताए हैं।

व्याख्या :-

कवि कहते हैं कि जिस प्रकार पठ हिमालय पर्वत उग्रा है उसी प्रकार भारतवासियों भी अपने वचन पर उग्रा रहते हैं और प्राण देकर भी अपने वचन को पूरा करते हैं। जब तक रस धरती पर हिमालय का अस्तित्व बना रहेगा तब तक भारतवासियों का भी अस्तित्व रहेगा।

कवि कहते हैं कि भारतवासियों को कोई नहीं ललकार सकता क्योंकि वे कभी भी हिंसा से नहीं हारे। कोई उन्हें दुःख नहीं दे सकता क्योंकि जो गंगा का जल पीते हैं अर्थात् भारतीय वे दुःख में भी मुस्कुराते हैं। इस प्रकार हिमालय पर्वत से हमारा गहरा रिश्ता है।



पृष्ठ के अंकों का योग

I  
S  
E  
M  
P



18.

(क) प्रस्तुत कविता में कवि वर्षा ऋतु का वर्णन कर रहा है कि इसके आते ही सारे वन और बगीचे हरे-भरे हो गए हैं और उन पर नए पत्ते, फूल और फल जा गए हैं। वनों में मोर खुशी से आचक्र आनंद का अनुभव कर रहे हैं और इस सुंदर दृश्य को वादल भी देख रहे हैं।

(ख) उक्त पंक्तियों में वर्षा के मौसम का वर्णन हुआ है।

(ग) शीर्षक :-

"वर्षा ऋतु"।

B  
S  
E  
M  
P



19.

(क)

शीर्षक :-

"प्रजातन्त्र का आधार" ।

(ख)

शब्द

अर्थ

क्रियान्वयन → स्थापना करना, निर्माण करना ।राष्ट्रीय चरित्र → राष्ट्रवासियों की कर्तव्य निष्ठता

(ग)

प्रस्तुत गद्यांश में प्रजातन्त्र के निर्माण के लिए आवश्यक तत्व को बताया है । किसी भी राष्ट्र में उसके वासियों का चरित्र अर्थात् कर्तव्यनिष्ठा ही प्रजातन्त्र का आधार है । यही उस राष्ट्र की नींव होती है । जितनी राष्ट्रवासियों की कर्तव्यनिष्ठा होगी उतनी ही उसका भविष्य उज्ज्वल होगा । अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि भारत का अपने राष्ट्रचरित्र के बल पर विश्व में उन्नत मस्तक है ।



23

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{-} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 23 के अंक                      कुल अंक



21.

### आतंकवाद

प्रस्तावना →

"आतंकवाद" दो शब्दों से मिलकर बना है "आतंक" और "वाद"। आतंक का शाब्दिक अर्थ है डर अथवा भय और वाद का अर्थ है किसी चीज का अनुसरण करना। इस प्रकार आतंकवाद का अर्थ है चारों ओर भय का वातावरण बनाना जो केवल भारत से ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व से संबंधित है।

आतंकवाद के कारण →

आतंकवाद के कई कारण होते हैं जो इस प्रकार हैं -

(i) शत्रुता → आतंकवाद का प्रमुख कारण शत्रुता है। किन्हीं दो देशों, समुदायों आदि के बीच शत्रुता के कारण आतंकवाद का जन्म होता है।

(ii) बेशेजगारी → बेशेजगारी के कारण उपर्युक्त आतंकवाद में लग जाता है जिससे उसे आतंकवादी समुदायों की सहायता मिल सके।

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

24

$$\boxed{\quad} + \boxed{-} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 24 के अंक                      कुल अंक



B  
S  
E  
M  
P

(iii) अशिक्षा एवं निर्धनता → ये दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। लोग निर्धनता के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं करते फलस्वरूप वे अज्ञानता के कारण धन के लालच में आतंकवाद करने लगते हैं।

(iv) विरोध प्रदर्शन → कई बार आम जनता भी कुछ नीतियों से असहमत होकर आतंकवाद करके अपना विरोध प्रदर्शन करती हैं।

आतंकवाद के परिणाम → आतंकवाद के फलस्वरूप अनेक दुःपरिणाम उद्भागर हैं जो इस प्रकार हैं!

(i) आतंकवाद के कारण वस्तुओं के दाम बढ़ते हैं। आतंकवादियों द्वारा किए गए नुकसान के कारण वस्तुएँ समय पर नहीं पहुँच पाती अतः इससे महँगारी बढ़ती है।

(ii) इसके कारण अपार जन और धन की हानि होती है।

(iii) यह राष्ट्रो के विकास में बाधक है और इससे विश्व शांति भंग होती है।



पृष्ठ के अंकों का योग





Lined writing area with a diagonal line crossing through it.



ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

=

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

+

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

3

For the use of the

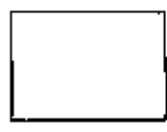


P  
M  
E  
S  
B

35



ಈಗಿನ ದಿನ



=

ಮಾಸ ಮತ್ತು ವರ್ಷ



+

ಒಟ್ಟು ಪರಿಷ್ಕರಣೆ

